शिक्षक-शिक्षा के उद्देश्य - हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली सफलतापूर्वक उपलब्धकर्ता रही

The aims of teacher-Education our present System of Education is successful in achieving them →

सामान्य रूप से यह कहा जाता है। कि अध्यापको को शिक्षा देना इसलिए आवश्यक है ताकि वे अपने विषय को रोचक और सरल बनाकर पढ़ा सके। उन विधियो की उन्हे जानकारी हो जाय, जो अध्यापन को रोचक और प्रभावी बनाती हैं। वे अपने विद्यार्थियो को भली प्रकार समझ सके। उनके रुचियो और स्वभाव को जानकर उनका समुचित मार्ग दर्शन कर सके। इस एक ओर उनमे स्वयं भी अपने कार्य के प्रति विश्वास उत्पन्न हो और दूसरी ओर वे अपने विद्यार्थियो मे भी विश्वास उत्पन्न कर सके।

शिक्षा आयोग, 1964 मे लिखा था, " शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए यह अनिवार्य है कि अध्यापको के व्यक्तिक

शिक्षण का एक समुचित कार्यक्रम हो। अध्यापकों के प्रशिक्षण पर किये गये व्यय का प्रतिफल सचमुच काफी मूल्यवान होगा, क्योंकि उसके परिणामस्वरूप लाखों बालकों की शिक्षा में जितना सुधार होगा, उसकी तुलना में अति आर्थिक व्यय की माता बहुत कम होगी।"

अध्यापक - शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षक परिषद् (नेशनल काउन्सिल फार टीचर एजुकेशन) ने किया है। उसने अध्यापक शिक्षा के अग्र लिखित उद्देश्य बताये हैं —

(i) अध्यापक न केवल बच्चों का नेता बने बल्कि समाज का मार्ग - दर्शक भी बन सके।

(ii) अध्यापक समाज और विद्यालय के बीच की कड़ी बने।

(iii) अध्यापक में यह गुण विकसित करे कि वह समाज में परिवर्तन लाने वाले की भूमिका निभा सके।

(iv) अधिगम और शिक्षण के सर्वमान्य सिद्धान्तों के आधार पर अध्यापक शिक्षण कार्य कर सकें।

पूर्व - प्राथमिक स्तर —

पूर्व प्राथमिक अध्यापक शिक्षा कोर्स, विभिन्न प्रकार के हैं, जैसे - मॉण्टेसरी, किण्डरगार्टन, नर्सरी, हैप्पी एजूकेशन, पूर्व बेसिक आदि। किण्डरगार्टन, मॉण्टेसरी और नर्सरी के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में काफी समानता है। इसमें बाल मनोविज्ञान, आरोग्य - विज्ञान एवं आहार, विद्यालय - प्रशासन बाल - शिक्षण पद्धति, संगीत, चित्रकला हस्तशिल्प तथा शारीरिक व्यायाम आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। ऑल इण्डिया चाइल्ड एजुकेशन कॉन्फ्रेंस (1978) की रिपोर्ट के अनुसार सन् 1976 तक भारत में 62 पूर्व - प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र थे।

प्राथमिक स्तर —

विगत पंचवर्षीय योजनाओं में प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों का बहुत विस्तार हुआ है।

Date :

यह प्रशिक्षण कोर्स मैट्रिक पास विद्यार्थियों के लिए है और अधिकांश राज्यों में इसकी अवधि दो वर्ष है। ये प्रशिक्षण संस्थाएँ दो प्रकार की है - (i) बुनियादी और (ii) गैर - बुनियादी।

सामुदायिक जीवन का संगठन, समाज प्रशिक्षण, बाल अध्ययन, बाल शिक्षा का इतिहास, पूर्व बुनियादी शिक्षा के मूल सिद्धान्त एवं उद्देश्य, बुनियादी शिक्षा के पाठ्य - विषय कार्य - संगठन स्वच्छता एवं स्वास्थ्य, प्रकृति अध्ययन भाषा साहित्य, संगीत कला एवं शिल्प।

माध्यमिक स्तर -

प्रशिक्षण महा-विद्यालय हाईस्कूल और हायर सैकण्डरी कक्षाओं के लिए होता-ध्यापकों को प्रशिक्षण देते है। इनमें केवल स्नातक और अधिस्नातक ही प्रवेश पा सकते है। इस कोर्स की अवधि एक वर्ष है। इनमें शिक्षण सिद्धान्तो और शिक्षण - विधियों पर विशेष बल दिया जाता है।